<u>**प्रेस विज्ञप्ति**</u>

# सांची विश्वविद्यालय के छात्र ने जीता चित्रकारी का राष्ट्रीय पुरस्कार

- **मध्य प्रदेश के विदिशा के रहने वाले हैं भारत कुमार**
- **आईफाक्स(AIFACS) ने प्रोफेशनल चित्राकारों के लिए आयोजित की थी प्रतियोगिता**
- **200 से अधिक राष्ट्रीय चित्रकारों के बीच भारत को मिली सफलता**
- **आर्किटेक्ट प्रतियोगिता में भी जीता भारत ने पुरस्कार**
- **विवि के इंडियन पेंटिंग विभाग की छात्रा स्नेहलता मिश्रा का जे.आर.एफ में चयन**
- **विभागाध्यक्ष को भी मिला राष्ट्रीय महिला कलारत्न पुरस्कार**

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के इंडियन पेंटिंग विभाग में पी.एच.डी कर रहे छात्र भारत कुमार जैन ने चित्रकारी का राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार जीता है। भारत को AIFACS (All India Fine Arts & Craft Society, New Delhi) इस पुरस्कार के तौर पर 25 हज़ार रुपए नगद प्रदान करेगी। वे 10 दिसंबर को इस पुरस्कार को ग्रहण करने के लिए दिल्ली में होंगे। भारत कुमार  विदिशा के रहने वाले हैं। AIFACS आईफाक्स प्रतिवर्ष इस प्रतियोगिता को आयोजित करता है। इस प्रतियोगिता में फ्री लांस करने वाले प्रोफेशनल चित्रकार हिस्सा लेते हैं। यह प्रतियोगिता सभी स्तर के प्रतिभागियों के लिए आयोजित की जाती है। भारत कुमार के अलावा 200 से अधिक चित्रकारों का चयन इस प्रतियोगिता के लिए किया गया था जिसमें उन्होंने सर्वप्रथम स्थान हासिल किया है।

आईफाक्स के इस पुरस्कार के अलावा भारत कुमार का चयन सीएमआर एजुकेशनल इंस्टीट्यूट बैंगलोर के कैंप के लिए भी हुआ है। इस चयन के लिए संस्थान ने उन्हें 15 हज़ार रुपए नगद के पुरस्कार से नवाज़ा है। दरअसल, सीएमआर एजुकेशनल संस्था आर्किटेक्ट विश्वविद्यालय बैंगलोर संस्था है और इस कैंप के लिए पूरे देश से 25 चित्रकारों का चयन किया गया था। कैंप में चयनित होने वाले मध्य प्रदेश के एकमात्र चित्रकार भारत भी थे। संस्था ने कला के साथ आर्किटेक्ट को जोड़ते हुए अध्ययन को प्राथमिकता दी थी जिसके लिए इन चित्रकारों को चित्रकारी के लिए आमंत्रित किया गया था।

सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ यज्ञेश्वर एस. शास्त्री एवं कुलसचिव श्री अदिति कुमार त्रिपाठी ने भारत कुमार को उनकी इन दोनों सफलताओं के लिए बधाई दी। सांची विश्वविद्यालय के इंडियन पेंटिंग विभाग को एक साथ तीन सफलताएं हासिल हुई हैं। इन अधिकारियों ने इन कामयाबियों के लिए भी विभाग और विभागाध्यक्ष को बधाई दी। विश्वविद्यालय की ही पी.एच.डी की छात्रा स्नेहलता मिश्रा का चयन यूजीसी के जे.आर.एफ(जूनियर रिसर्च फैलोशिप) के लिए हुआ है। उन्हें इस कामयाबी के लिए यूजीसी की ओर से 30 हज़ार रुपए प्रतिमाह की स्कॉलरशिप मिलेगी।

विश्वविद्यालय की इंडियन पेंटिग विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ सुष्मिता नंदी को टोंक राजस्थान के बारहवें राष्ट्रीय कलापर्व क्रेयॉन्स की अंतरंग कला एवं शिक्षण संस्थान ने राष्ट्रीय महिला कलारत्न पुरस्कार से नवाज़ा है।

भारत कुमार का पूर्व में भी राष्ट्रीय ललित कला अकादमी के लिए चयन हो चुका है। वे केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय की स्कॉलरशिप के लिए भी चयनित हो चुके हैं तथा प्रफुल्ल धनकर केंद्रीय ज़ोन अवार्ड के लिए भी चयनित किए जा चुके हैं।

FREE PRESS www.freepressjourna
BHOPAL | SUNDAY | DECEMBER 2, 2018

# JAIN WINS NATIONAL AWARD IN PAINTING

OUR STAFF REPORTER
BHOPAL

Bharat Kumar Jain, pursuing PhD from Indian painting department of Sanchi University of Buddhist-Indic Studies, has won national award in painting. He will be given a cash prize of Rs 25,000 from AIFACS (All India Fine Arts & Craft Society, New Delhi).

AIFACS organises this competition every year for freelance professional painters. Apart from Bharat, 200 other painters participated in this competition.

Bharat has also been selected for a camp of CMR Educational Institute Bangalore and will receive Rs 15,000 as cash prize. Bharat Kumar has also been selected for National Lalit Art Academy and was also selected for Prafull Dhankar Central Zone Award.

Vice Chancellor, Sanchi University, Yagyeshwar Shastri and Registrar Aditi Kumari congratulated Bharat for his achievements.

पत्रिका PLUS
भोपाल, 02.12.2018

# सांची विवि के स्टूडेंट ने पेंटिंग में जीता आईफाक्स नेशनल अवॉर्ड

**भोपाल** • सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के इंडियन पेंटिंग विभाग में पीएचडी कर रहे छात्र भारत कुमार जैन ने चित्रकारी का राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार जीता है। भारत को इस पुरस्कार के तौर पर आईफाक्स 25 हजार रुपए कैश प्राइज देगा। वे 10 दिसंबर को इस पुरस्कार को लेने दिल्ली जाएंगे। भारत कुमार विदिशा के रहने वाले हैं। आईफाक्स प्रतिवर्ष इस प्रतियोगिता को आयोजित करता

है। इस प्रतियोगिता में फ्रीलांस पेंटिंग करने वाले प्रोफेशनल चित्रकार हिस्सा लेते हैं। यह प्रतियोगिता सभी स्तर के प्रतिभागियों के लिए आयोजित की जाती है। भारत कुमार के अलावा 200 से अधिक चित्रकारों का चयन इस प्रतियोगिता के लिए किया गया था जिसमें उन्होंने सर्वप्रथम स्थान हासिल किया है।

## <u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

# कश्मीर के 135 छात्रों ने किया सांची विश्वविद्यालय का भ्रमण

- **विभिन्न विभागों में पहुंचे और पाठ्यक्रमों के बारे में जाना**
- **कश्मीर के 6 विभिन्न ज़िलों से आए हैं छात्र**
- **"मध्य प्रदेश के लोग सरल, शांतिप्रिय और मिलनसार"- कश्मीरी छात्र**
- **मध्य प्रदेश के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों पर जाएंगे ये छात्र**
- **सांची स्तूप का भी किया भ्रमण**
- **वाल्मी संस्था और नेहरू युवा केंद्र करा रही है भ्रमण का आयोजन**

कश्मीर के विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने वाले 135 छात्रों ने आज सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। इन छात्रों ने सांची विश्वविद्यालयों के छात्रों के साथ मेल-मुलाकात कर एक दूसरे की संस्कृति, शिक्षा व्यवस्था, कोर्सेस और संस्थाओं के बारे में जानकारी हासिल की। ये कश्मीरी छात्र 6 दिनों के मध्य प्रदेश भ्रमण पर हैं। अपनी यात्रा के तीसरे दिन इन छात्रों ने आज सांची विश्वविद्यालय से पहले सांची स्तूप का भ्रमण किया। सांची विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों ने भी कशमीरी छात्रों का उत्साह बढ़ाया। सांची विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग में पी.एच.डी कर रहे कशमीरी छात्र अशरफ वानी ने कशमीरी भाषा में छात्रों को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में बताया।

कश्मीर के 6 अलग-अलग ज़िलों से मध्य प्रदेश पहुंचे इन छात्रों ने अपने अनुभव सांची विश्वविद्यालय के छात्रों से साझा किया। पीजी के छात्र शाहिद वानी ने बताया कि मध्य प्रदेश के लोग बेहद ही सरल हैं और वे जहां भी गए पूरे प्रेम और स्नेह से उनका स्वागत किया गया। एक और छात्र इमरान का कहना था कि मध्य प्रदेश के लोग सरल, शांतिप्रिय, सम्मान देने वाले और सहयोग देने वाले हैं।

नेहरू युवा केंद्र द्वारा आयोजित किए गए इस टूर में कश्मीरी छात्रों को प्रदेश के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों, शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों का दौरा कराया जा रहा है। मध्य प्रदेश सरकार ने इस टूर की ज़िम्मेदारी IIFM अंतर्गत WALMI संस्था को सौंपा है। वाल्मी के अधिकारी इन कश्मीरी छात्रों को भ्रमण करा रहे हैं।

इन कश्मीरी छात्रों ने सांची विश्वविद्यालय के विभिन्न कोर्सेस के बारे में जानने के लिए उत्साह दिखाया। कई छात्रों का कहना था कि वे उच्च शिक्षा के लिए मध्य प्रदेश का चयन करेंगे। इस टूर में 9वीं से 12वीं के छात्र, ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन के छात्र हैं।

अपनी यात्रा के पहले दिन इन कश्मीरी छात्रों ने शौर्य स्मारक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय का भ्रमण किया। सांची विश्वविद्यालय के बाद ये छात्र ताज्जुल मस्जिद भी पहुंचे। वाल्मी संस्थान में कल इन कश्मीरी छात्रों का मध्य प्रदेश के छात्रों के साथ सांस्कृतिक उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

city भास्कर
BHOPAL | TUESDAY 04 DECEMBER | 2018

# कश्मीरी छात्रों ने जाना सांची का इतिहास, साझा किए अनुभव

## 'वतन को जानो' कार्यक्रम में कश्मीर से आए स्टूडेंट्स धरोहर को जानने पहुंचे सांची बौद्ध यूनिवर्सिटी

सिटी रिपोर्टर | भोपाल

कश्मीर के विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले 135 छात्रों ने सोमवार को सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन यूनिवर्सिटी का विजिट किया। इन छात्रों ने सांची विवि के छात्रों के साथ एक-दूसरे की संस्कृति, शिक्षा व्यवस्था, कोर्सेस और संस्थाओं के बारे में जानकारी हासिल की। उल्लेखनीय है कि कश्मीर के यह युवा वतन को जानो कार्यक्रम के तहत 6 दिनों के लिए मप्र भ्रमण पर हैं। अपनी यात्रा के तीसरे दिन सोमवार को इन छात्रों ने सांची विवि से पहले सांची स्तूप के इतिहास को जाना। विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में पीएचडी कर रहे कश्मीरी छात्र अशरफ वानी ने कश्मीरी भाषा में छात्रों को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। वहीं कश्मीर के 6 अलग-अलग जिलों से आए इन छात्रों ने अपने अनुभव सांची यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स से साझा किया। नेहरू युवा केंद्र द्वारा आयोजित वतन को जानो कार्यक्रम वाल्मी परिसर में आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में आए कश्मीरी स्टूडेंट्स 9वीं से 12वीं के साथ ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन के छात्र हैं।

FREE PRESS www.freepressjournal.in
BHOPAL | TUESDAY | DECEMBER 4, 2018

# Present tense, future uncertain, say Kashmiri youths

SMITA
BHOPAL

The young adults from the valley of Kashmir are extremely worried and concerned over the adverse impact militancy is having on their education and future careers.

They say that the actions of the militants on one hand and of the security forces on other are leading to forced closures of schools and colleges. The job opportunities are shrinking and fear and uncertainty pervade the air. They feel as if they are living in an open jail.

This was the gist of the conversation Free Press had with Kashmiri students of 18-22 years age-group, who are in the city to take part in a six-day Kashmiri Youth Exchange Prorgamme 2018-19, 'Vatan Ko Jano', underway at the Water and Land Management Institute (WLMI). The event has been organised by the Nehru Yuva Kendra in collaboration with the Union ministry of home affairs.

The event has been organised by Nehru Yuva Kendra Sangathan (Ministry of Youth Affairs and Sports, govt. of India) in collaboration with Ministry of Home Affairs, govt. of India. Nearly 127 students from six sensitive districts of J&K – Anantnag, Baramulla, Budgam, Srinagar, Pulwama and Kupwada – arrived in the city on December 1.

Yawar from Budgam told Free Press, "Who doesn't want to live in peace? We also do." Rejecting the Pakistan's claim over Kashmir, he said, "India is much better than Pakistan. I think, jo apne desh (Pakistan) ko nahi sambhal sakta wo humein kya sambhalenge."

Yawar, who is pursuing post graduation added, "We Kashmiris have been caught in a bind. If we don't give shelter to militants, they threaten to kill us and if we do, security forces take action against us. Kashmir lacks educational facilities and industry. There is hardly any scope for business. We run a mobile repairing shop but we had to keep it closed for two weeks in November due to strike. It is very difficult to run our households. We also used to export dry fruits but it has become financially unviable. Four years back, Akhrot (walnut) sold for Rs 300 per kg but now the rate is down to Rs 120.

"I think, Kashmir issue can be solved easily if politicians stop meddling in it. Politicians are only interested in building their vote banks. But we are still hopeful that koi to aisa leader aayega jiske dimag mein ye baat aayegi ki chalo main apne swarth ke khatir kyon kisi ko marun..., but at present, things are difficult," he added.

Similarly, Taufeeq Ahmed Bhat, 18, from Tral Tehsil in Pulwama district said, "I study in class 11 and want to be an engineer but most of the days, my school remains closed, either due to attack by militants or stone pelting. Sometimes, it remains closed for a week at stretch. We take tuitions at home to appear in exams. We want peace and want to live happily. Government is doing nothing. Army is unable to protect us from the militants." His father is a carpenter and mother is a homemaker.

He said that they have to remain confined to their homes from 9 pm to 6 am. "Schools run from 10 am to 4 am but often sound of gun fire distracts us."

"Srinagar is better off than South Kashmir. Education system is good but educational institutions remain closed for long periods. My school is closed for the past one month so I am studying at home," said Danish Gul, 18, who lives in Srinagar and studies in class 11.

On being asked which stream he would choose for further studies, Gul replied, "Let's see, kismat mein kahan tak padhna likha hai... waha per to kismat hi aisi hai". The sadness in his voice could hardly be missed. Gul, whose father is farmer and mother, a homemaker, wants to be a businessman.

Madyalaar who studies in first year said Kashmiris think differently. "We don't want to see bloodshed daily. Schools and offices remain closed there. Business is down. We have no work."

"I want to be a cricketer. Virat Kohli, Rohit Sharma and Hashim Amla are my favourite players. I don't have much interest in studies. I want to play cricket but there is no playground there. My father is a labourer and mother weaves shawls," said 18-year-old Amir Shakeel Bhat from Budgam who studies in class 12.

नवदुनिया
भोपाल, मंगलवार 04 दिसंबर 2018

# भोपाल की गंगा-जमुनी तहजीब से रूबरू हुए कश्मीर के युवा

## 'वतन को जानो' कार्यक्रम के तहत छात्रों ने किया शहर और सांची का भ्रमण

कश्मीरी युवाओं ने सोमवार को ताजुल मस्जिद का भ्रमण कर इसके धार्मिक महत्व और स्थापत्य कला के बारे में जाना।

**भोपाल। नवदुनिया रिपोर्टर**

नेहरू युवा केंद्र संगठन की ओर से सोमवार को भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जल एवं भूमि प्रबंधन संस्थान (वाल्मी) में 1 से 6 दिसंबर तक चल रहे कश्मीरी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम वतन को जानो के तहत यह आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम में युवाओं को विश्व विरासत एवं स्थापत्य कला समझने का मौका मिला। भ्रमण कार्यक्रम में छात्रों को सांची स्तूप और बरेला ग्राम स्थित सांची विश्वविद्यालय घूमने को मौका मिला। इस मौके पर विश्वविद्यालय में संचालित शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी प्रदान की गई। सांची विश्वविद्यालय में प्रतिनिधि दल का स्वागत डीन प्रो. नवीन मेहता ने किया। इस दौरान तुलसी का पौधा भेंट किया गया।

### जो किताबों में पढ़ा था उसे करीब से देखा

कश्मीरी युवाओं ने ताजुल मस्जिद भ्रमण के दौरान कहा कि हमने जो किताबों में पढ़ा था और बुजुर्गों से सुना था वह आज हम देख सके। बड़गांव जिले से आए प्रतिभागी यावर ने कहा कि भोपाल अमन और मोहब्बत का शहर है। यहां हम हिंदी, उर्दू के साथ गंगा जमुना तहजीब से रूबरू हो सके।

कार्यक्रम में आज राष्ट्र निर्माण में कला, साहित्य और समाज की भूमिका विषय पर डॉ. उमेश सिंह निदेशक साहित्य अकादमी व प्रो. आरपी शाक्य अपने विचार व्यक्त करेंगे।

पत्रिका PLUS

BHOPAL, TUESDAY 04/12/2018

# गंगा जमुनी तहजीब से रूबरू हुए कश्मीरी युवा, सांची और ताजुल मस्जिद का किया भ्रमण

**भोपाल** ◆ नेहरु युवा केंद्र संगठन भारत सरकार द्वारा गृह मंत्रालय के सहयोग से 1से 6 दिसम्बर तक चल रहें कश्मीरी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम 'वतन को जानो' के तहत युवाओं को विश्व विरासत और स्थापत्य कला के अनूठे उदाहरण में से एक सांची स्तूप व वरेला ग्राम में स्थित सांची विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया।

कश्मीरी युवाओं ने ताजुल मस्जिद भ्रमण के दौरान कहा कि हमने जो किताबों में पढ़ा था और बुजुर्गो से सुना था वहीं आज हम वतन को जानो प्रोग्राम के माध्यम से देख पा रहे। बड़गांव जिले से आए प्रतिभागी यावर ने कहा कि भोपाल अमन और मोहब्बत का शहर है यहां हम हिंदी,उर्दू के साथ गंगा जमुनी तहजीब से रूबरू हो रहें हैं। कार्यक्रम में 4 दिसम्बर सुबह 10.30 बजे से राष्ट्र निर्माण में कला, साहित्य और समाज की भूमिका विषय पर डॉ उमेश सिंह निदेशक साहित्य अकादमी और प्रो. आरपी शाक्य संबोधित करेंगे।

## एक-दूसरे की संस्कृति और शिक्षा को समझा

भोपाल. कश्मीर के 135 छात्रों ने सोमवार को सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। इन छात्रों ने सांची विवि के छात्रों के साथ मेल-मुलाकात कर एक दूसरे की संस्कृति, शिक्षा व्यवस्था, कोर्सेस और संस्थाओं के बारे में जानकारी हासिल की। विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में पीएचडी कर रहे कश्मीरी छात्र अशरफ वानी ने कश्मीरी भाषा में छात्रों को विवि के पाठ्यक्रमों के बारे में बताया। कश्मीर के 6 अलग-अलग जिलों से मप्र पहुंचे इन छात्रों ने अपने अनुभव सांची विवि के छात्रों से साझा किया। प्रतिनिधि दल का स्वागत डीन प्रो.नवीन मेहता ने किया।

राज एक्सप्रेस मंगलवार, 4 दिसम्बर, 2018

# कश्मीरी छात्रों ने किया सांची विश्वविद्यालय का भ्रमण

- कश्मीर के 6 विभिन्न जिलों से आए हैं छात्र
- सांची स्तूप का भी किया भ्रमण
- वाल्मी संस्था और नेहरू युवा केंद्र करा रही है भ्रमण

भोपाल ■ राज न्यूज नेटवर्क

कश्मीर के विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने वाले 135 छात्रों ने सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। इन छात्रों ने सांची विश्वविद्यालयों के छात्रों के साथ मेल.मुलाकात कर एक दूसरे की संस्कृति, शिक्षा व्यवस्था, कोर्सेस और संस्थाओं के बारे में जानकारी हासिल की।

ये कश्मीरी छात्र 6 दिनों के मध्य प्रदेश भ्रमण पर हैं। अपनी यात्रा के तीसरे दिन इन छात्रों ने सांची विश्वविद्यालय से पहले सांची स्तूप का भ्रमण किया। सांची विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों ने भी कशमीरी छात्रों का उत्साह बढ़ाया। सांची विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग में पीएचण्डी कर रहे कशमीरी छात्र अशरफ वानी ने कशमीरी भाषा में छात्रों को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में बताया। कश्मीर के 6 अलग.अलग जिलों से मध्य प्रदेश पहुंचे इन छात्रों ने अपने अनुभव सांची विश्वविद्यालय के छात्रों से सांझा किया। पीजी के छात्र शाहिद वानी ने बताया कि मध्य प्रदेश के लोग बेहद ही सरल हैं और वे जहां भी गए पूरे प्रेम और स्नेह से उनका स्वागत किया गया। एक और छात्र इमरान का कहना था कि मध्य प्रदेश के लोग सरल, शांतिप्रिय, सम्मान देने वाले और सहयोग देने वाले हैं। नेहरू युवा केंद्र द्वारा आयोजित किए गए इस टूर में कश्मीरी छात्रों को प्रदेश के विभिन्न ऐतिहासिक

स्थलों, शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों का दौरा कराया जा रहा है। मध्य प्रदेश सरकार ने इस टूर की जिम्मेदारी संस्था को सौंपा है। वाल्मी के अधिकारी इन कश्मीरी छात्रों को भ्रमण करा रहे हैं। इन कश्मीरी छात्रों ने सांची विश्वविद्यालय के विभिन्न कोर्सेस के बारे में जानने के लिए उत्साह दिखाया। कई छात्रों का कहना था कि वे उच्च शिक्षा के लिए मध्य प्रदेश का चयन करेंगे।

इस टूर में 9वीं से 12वीं के छात्रए ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन के छात्र हैं।

अपनी यात्रा के पहले दिन इन कश्मीरी छात्रों ने शौर्य स्मारकए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय का भ्रमण किया। सांची विश्वविद्यालय के बाद ये छात्र ताज्जुल मस्जिद भी पहुंचे। वाल्मी संस्थान में कल इन कश्मीरी छात्रों का मध्य प्रदेश के छात्रों के साथ सांस्कृतिक उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

# <u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

# सांची विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन का आयोजन

- **शाक्त तंत्र और श्रीविद्या परंपरा पर पहला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन**
- **17-19 दिसंबर, 2018 को सांची विवि में जुटेंगे देश-विदेश से विद्वान**
- **34 विदेशी विद्वानों सहित 130 भारतीय विद्वत्-जन प्रस्तुत करेंगे शोध पत्र**
- **वैदिक और बौद्ध परंपराओं का प्रतिनिधित्व करता है शाक्त तंत्र**
- **शाक्त तंत्र पर आधारित है मोक्ष मार्ग की श्रीविद्या परंपरा**

भुक्ति और मुक्ति के साथ जागतिक समृद्धि और मोक्ष मार्ग बताने वाली **शाक्त तंत्र और श्रीविद्या** भारतीय एवं बौद्ध दर्शन की सर्वाधिक पुरानी परंपराओं में से एक है। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में "*शाक्त तंत्र एवं श्रीविद्या*" पर केंद्रित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 17-18-19 दिसंबर को हो रहा है। शाक्त तंत्र पर केंद्रित अपनी तरह के पहले आयोजन में विभिन्न देशों के 34 विदेशी विद्वान शामिल होंगे। लगभग 130 भारतीय विद्वान भी शाक्त तंत्र के विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे।

शाक्त तंत्र की परंपरा भारत में काफी पुरानी है क्योंकि यह भारतीय एवं बौद्ध दर्शन की सर्वाधिक पुरानी परंपराओं का प्रतिनिधित्व करती है जो पाँच हजार वर्षों से प्रचलित है। शाक्त तंत्र में वैदांतिक परंपरा के शाश्वत दर्शन शामिल हैं जो दर्शन और अभ्यास का मिला-जुला रूप है। शाक्त तंत्र के द्वारा साधक समृद्धि और आनंद के माध्यम से पीड़ा और दुखों से मुक्ति पा सकता है।

ब्रह्माण्ड का विज्ञान समझी जाने वाली श्री विद्या समस्त विज्ञानों की श्रेष्ठतम उपलब्धि मानी जाती है और यह स्वयं को समझने का विज्ञान है। श्रीविद्या परंपरा भक्ति और ज्ञान का वह आत्मिक मार्ग है जिसमें मातृशक्ति की पहचान द्वारा मनुष्य को स्वज्ञान प्राप्त होता है। शाक्त तंत्र की सर्वाधिक लोकप्रिय श्रीविद्या का अभ्यास करने वाले विद्वान मानते हैं कि इसकी सही समझ, ज्ञान एवं अनुष्ठान के माध्यम से योग की प्राप्ति की जा सकती है। श्रीविद्या परंपरा द्वारा किया जाने वाला योग मनुष्य के लिए मोक्ष की प्राप्ति का साधन बनता है जो मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

शाक्त तंत्र की श्रीविद्या पद्धति का ज्ञान और महत्व विश्व में बहुत कम लोगों को है और इसकी शक्ति और कल्याण के ज्ञान को लोगों के मध्य साझा करने के उद्देश्य से अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, फिनलैण्ड, बैल्जियम, कोरिया, श्रीलंका एवं नेपाल से विद्वान शामिल हो रहे हैं। सम्मेलन में बैल्जियम के इंडोलॉजिस्ट कोर्नाड इलेस्ट,कनाडा से प्रो अरविंद शर्मा, गोवा से सद्गुरु ब्रह्मेशानन्द जी, स्वामी परमात्मानन्द सरस्वती, स्वामी आध्यात्मानन्द, हरिप्रसाद स्वामी, महाबोधि सोसायटी के वेन. बनगला उपतिस्सा नायक थैरो, मुंबई से श्याम मनोहर गोस्वामी, महामहोपाध्याय एस रंगनाथन, प्रो ए के वी कृष्ण अय्या, गोवा विवि के गोरखनाथ मिश्रा और प्रो गोदावरीश मिश्रा जैसे विद्वान पहुंच रहे हैं।

सम्मेलन के दौरान 17 दिसंबर को शाम 6 बजे केरल के केवलम श्रीकुमार पनिक्कर का शास्त्रीय गायन होगा एवं शाम 7 बजे बैंगलोर की डॉ. पद्मजा सुरेश, भरतनाट्यम की प्रस्तुति देंगी। 18 दिसंबर को शाम 6 बजे कर्नाटक के पंडित गनपति भट्ट हसनागी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत करेंगे।

इस सम्मेलन हेतु सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय को संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश सरकार, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR), भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद (ICPR), भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (ICHR) और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) से  भी सहयोग प्राप्त हुआ है।

**The Hitavada** Saturday ■ December 15 ■ 2018

# Intl Dharma-Dhamma Conference to be held from 17th at Sanchi varsity of Buddhist-Indic Studies

■ Staff Reporter

THE International Conference on 'Shakta Tantra and Srividya' is going to be organised at Sanchi University of Buddhist-Indic Studies from December 17 to 19.

"Shakta Tantra and Srividya", one of the oldest traditions of Indian and Buddhist philosophies that speaks of world prosperity and path of liberation with gratitude.

In the first of its kind focused on the Shakta Tantra traditions, 34 foreign scholars from different countries will be joining. About 130 Indian scholars will also present research papers on various aspects of the Shakta Tantra.

The tradition of the Shakta Tantra is quite old in India because it represents the oldest traditions of Indian and Buddhist philosophy, which has been practiced for over a thousand years. The Shakta Tantra includes the eternal philosophy of the Vedantic tradition, which is a mixed form of philosophy and practice. Through the Shakta Tantra, the seeker can get rid of pain and misery through prosperity and happiness.

Srividya, considered to be the science of the Universe, is best of all science and it is a science to be understood itself. Srividya tradition is the spiritual path of devotion and knowledge, in which one gets enlightened by the identity of Mother Goddess Shakti. Scholars, who practice the most popular Srividya of the Shakta Tantra believe that yoga can be achieved through its correct understanding, knowledge and rituals. The yoga done by Srividya tradition forms a means of achieving salvation for mankind, which is the ultimate goal of human life.

Dignitaries addressing a press conference of International Dharma-Dhamma Conference at Sanchi University.

During the conference, on December 17, at 6 pm, Kavalum Shrikumar Panikkar will present classical singing and at 7 pm, Dr Padmaja Suresh of Bangalore will present Bharatnatyam. On December 18, at 6 pm, Pandit Ganapati Bhat Hassanagi of Karnataka will present Hindustani classical music.

In organising this prestigious conference, Sanchi University of Buddhist-Indic Studies received support from the Department of Culture, Madhya Pradesh Government, Indian Council for Cultural Relations (ICCR), Indian Philosophical Research Council (ICPR), Indian History Research Council (ICHR) and Indian Council of Social Science Research (ICSSR).

भोपाल, 15 दिसम्बर, 2018

**दैनिक जागरण**

# सांची में अंतरराष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन में जुटेंगे सैकड़ों विद्वान

रायसेन। सांची विश्वविद्यालय में 17 से 19 दिसंबर तक अंतरराष्ट्रीय धर्म धम्म सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इस तीन दिनी सम्मेलन में 34 विदेशी और 130 भारतीय विद्वान शाक्त तंत्र के विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे। सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, फिनलैंड, बेल्जियम, कोरिया, श्रीलंका एवं नेपाल के विद्वान शामिल होंगे। 17 दिसंबर को शाम 6 बजे केरल के श्रीकुमार पनिक्कर का शास्त्रीय गायन होगा। शाम 7 बजे बेंगलुरू की डॉ. पद्मजा सुरेश भरतनाट्यम की प्रस्तुति देंगी। 18 दिसंबर को शाम 6 बजे कर्नाटक के पंडित गनपति भट्ट हसनागी शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुत देंगे।

राज एक्सप्रेस
शनिवार 15 दिसंबर 2018

# शाक्त तंत्र एवं श्रीविद्या पर रायसेन में तीन दिवसीय सम्मेलन

रायसेन, (आरएनएन)। जिले में स्थित सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में ''शाक्त तंत्र एवं श्रीविद्या'' पर केंद्रित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 17 दिसंबर से शुरू होगा। इस तीन दिवसीय सम्मेलन में विभिन्न देशों के 34 विदेशी विद्वान और करीब 130 भारतीय विद्वान शाक्त तंत्र के विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे।

इस सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, फिनलैण्ड, बैल्जियम, कोरिया, श्रीलंका एवं नेपाल से विद्वान शामिल होंगे। सम्मेलन में बैल्जियम के इंडोलॉजिस्ट कोर्नाड इलेस्ट,कनाडा से प्रो. अरविंद शर्मा, गोवा से सद्गुरु ब्रमेशानंद, स्वामी परमात्मानंद् सरस्वेती, स्वामी आध्यात्मा नंदर, हरिप्रसाद, महाबोधि सोसायटी के वेन. बनगला उपतिस्सा नायक थैरो, मुंबई से श्याम मनोहर गोस्वामी, महामहोपाध्याय एस रंगनाथन, प्रो. एकेवी कृष्ण अैय्यर, गोवा विवि के गोरखनाथ मिश्रा और प्रो. गोदावरीश मिश्रा जैसे विद्वान पहुंच रहे हैं। इस सम्मेलन के लिए सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय को संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश सरकार, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद से भी सहयोग मिला है।

# <u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

# सांची विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन का आगाज़

- **शाक्त तंत्र और श्रीविद्या परंपरा पर पहला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन**
- **सभी के लिए मोक्ष पाने का तरीका तंत्र और श्रीविद्या में**
- **तंत्र के प्रयोगों को विज्ञान की कसौटी पर कसकर समाज उपयोगी बनाना**

ब्रह्मांड की शक्तियों व स्वयं से साक्षात्कार के सूत्र शाक्त तंत्र में हैं। 16 महाविद्याओं में से तीसरी महाविद्या यानि श्रीविद्या और शाक्ततंत्र के ऐतिहासिक, दार्शनिक, सामाजिक एवं अध्यात्मिक पहलुओं पर केंद्रित धर्म-धम्म सम्मेलन का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। विवि के कुलपति आचार्य डॉ. यज्ञेश्वर एस शास्त्री ने उद्घाटन भाषण में सम्मेलन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्रीविद्या और तंत्र के अकादमिक और दार्शनिक पक्ष को दुनिया के सामने लाने के सपने का जिक्र करते हुए कहा कि दुनियावी रहकर भी मोक्ष पाने का तरीका शाक्त तंत्र की पद्धतियों में है। शाक्त तंत्र के द्वारा साधक समृद्धि और आनंद के माध्यम से पीड़ा और दुखों से मुक्ति पा सकता है।सारस्वत व्याख्यान देते हुए भारतीय दार्शनिक परिषद के चेयरमैन प्रो.एस. आर. भट्ट ने कहा कि प्रयोजन और उससे मिलने वाले फल को देखना आवश्यक है। उन्होंने श्रीविद्या को ब्रह्मांड का ज्ञान बताते हुए कहा कि जो क्रिया यानि बुद्धि को प्राप्त कर उसका सदुपयोग करता है वही पंडित है।

मैकग्रिल यूनिवर्सिटी कनाडा के प्रो. अरविंद शर्मा ने कहा कि पूर्व में शाक्त तंत्र और इसके दूसरे प्रकार के तंत्र सभी वर्ण, जाति और महिलाओं के द्वारा भी किए जाते थे और इसमें कोई प्रतिबंध नहीं था। उन्होंने तंत्र को अवचेतन शक्तियों को जागृत करने का माध्यम बताते हुए व्यापक अर्थ में विज्ञान की कसौटी पर कसकर दुनिया के कल्याण में इस्तेमाल करने की बात की।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सद्‌गुरु ब्रह्मेश्वरानंदचार्य स्वामी ने कहा कि तंत्र में गुरु, देवता और मंत्रकी खासी महत्ता है। उन्होंने 16 महाविद्याओं में एक श्रीविद्या की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। समारोह के मुख्य अतिथि और महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख उपातिस्सा नायका थैरो ने अपने भाषण में तंत्र और बौद्ध धर्म में वज्रयान की तुलना करते हुए कहा कि भारत ने श्रीलंका को धर्म और संस्कृति से समृद्ध किया है। विवि के कुलसचिव श्री अदिति कुमार त्रिपाठी ने आगम और सगुण साधना पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अहं ब्रह्मास्मि का विचार बहुत ही मौजू है और जब किसी को संबोधित कर ध्यान केंद्रित करते है तो वो प्रज्ञावान हो जाता है।

तीन दिन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, फिनलैण्ड, बैल्जियम, कोरिया, श्रीलंका एवं नेपाल से 34 विदेशी विद्वान समेत 130 भारतीय विद्वान शाक्त तंत्र के विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत कर रहे हैं। पहले दिन दो सामान्य सत्र, तीन गोलमेज सत्र एवं एक अकादमिक सत्र में करीब 30 विद्वानों ने अपने विचार एवं शोधपत्र प्रस्तुत किए। विवि के डीन डॉ. नवीन मेहता ने उज्जैन की तंत्र परपंरा पर अपना शोध-पत्र प्रस्तुत किया। दूसरे दिन दो सामान्य सत्र, छह गोलमेज सत्र एवं दो अकादमिक सत्र में 50 से ज्यादा विद्वानों के शोध-पत्र एवं व्याख्यान होंगे।

सम्मेलन में आज केरल के केवलम श्रीकुमार पनिक्कर ने देवी स्तुति एवं आदि शंकराचार्य विरचित सौदर्यलहरी, कनकधारा स्त्रोत के श्लोकों का शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया वहीं बैंगलोर की डॉ. पद्मजा सुरेशने भरतनाट्यम की प्रस्तुति दी। 18 दिसंबर को शाम 6 बजे कर्नाटक के पंडित गनपति भट्ट हसनागी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत करेंगे।

पत्रिका

BHOPAL TUESDAY
18/12/2018

### सांची विवि में अंतरराष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन का आगाज

# दुनिया में रहकर भी मोक्ष पाने का तरीका शाक्त तंत्र की पद्धतियों में

**भोपाल** ◆ ब्रह्मांड की शक्तियों व स्वयं से साक्षात्कार के सूत्र शाक्त तंत्र में हैं। 16 महाविद्याओं में से तीसरी महाविद्या यानि श्रीविद्या और शाक्ततंत्र के ऐतिहासिक, दार्शनिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पहलुओं पर केंद्रित धर्म-धम्म सम्मेलन का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में सोमवार को हुआ।

विवि के कुलपति आचार्य डॉ. यज्ञेश्वर एस शास्त्री ने कहा कि श्रीविद्या और तंत्र के अकादमिक और दार्शनिक पक्ष को दुनिया के सामने लाने के सपने का ज़िक्र करते हुए कहा कि दुनिया में रहकर भी मोक्ष पाने का तरीका शाक्त तंत्र की पद्धतियों में है। तीन दिन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, फिनलैण्ड, बेल्जियम, कोरिया, श्रीलंका और नेपाल से 34 विद्वान सहित 130 भारतीय विद्वान शाक्त तंत्र के विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत कर रहे हैं।

सारस्वत व्याख्यान देते हुए भारतीय दार्शनिक परिषद् के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने कहा कि प्रयोजन और उससे मिलने वाले फल को देखना आवश्यक है। उन्होंने श्रीविद्या को ब्रह्मांड का ज्ञान बताते हुए कहा कि जो क्रिया यानि बुद्धि को प्राप्त कर उसका सदुपयोग करता है वही पंडित है। मैकग्रिल यूनिवर्सिटी कनाडा के प्रो. अरविंद शर्मा ने कहा कि पूर्व में शाक्त तंत्र और इसके दूसरे प्रकार के तंत्र सभी वर्ण, जाति और महिलाओं के द्वारा भी किए जाते थे और इसमें कोई प्रतिबंध नहीं था।

### सौंदर्य लहरी पर आधारित नृत्य की दी प्रस्तुति

सांस्कृतिक कार्यक्रम में केरल के शास्त्रीय गायक केवलं श्रीकुमार पनिक्कर ने अपना गायन प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति की शुरुआत गणपति श्रुति मुदाकरा मोदकम से की। इसके बाद ललिता शास्त्रलिंगा, राज-राजेश्वरी अष्टकम, आदि शंकराचार्य की सौंदर्य लहरी, एगिरी नंदिनी, कनकधारा स्त्रोत, ललिता त्रिश्यति और मीनाक्षी पंचरत्ना के कुछ श्लोकों को गायन रूप में प्रस्तुत किया। हारमोनियम पर केवलं श्रीकुमार ने, तबले पर हरिकृष्णमूर्ति ने संगत दी।

दैनिक जागरण 18 दिसम्बर, 2018

# बुद्धि को प्राप्त कर उसका सदुपयोग करने वाला ही पंडित

## सांची विवि में अंतर्राष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन का आगाज

लेक सिटी रिपोर्टर

ब्रह्मांड की शक्तियों व स्वयं से साक्षात्कार के सूत्र शाक्तम तंत्र में हैं। 16 महाविद्याओं में से तीसरी महाविद्या यानि श्रीविद्या और शाक्त तंत्र के ऐतिहासिक, दार्शनिक, सामाजिक एवं अध्यात्मिक पहलुओं पर केंद्रित धर्म-धम्म सम्मेलन का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में सोमवार को किया गया। इस अवसर पर विवि के कुलपति आचार्य डॉ. यज्ञेश्वर एस शास्त्री ने उद्घाटन भाषण में श्रीविद्या और तंत्र के अकादमिक और दार्शनिक पक्ष को दुनिया के सामने लाने के सपने का जिक्र करते हुए कहा कि दुनिया में रहकर भी मोक्ष पाने का तरीका शाक्त तंत्र की पद्धतियों में है। शाक्त तंत्र के द्वारा साधक समृद्धि और आनंद के माध्यम से पीड़ा और दुखों से मुक्ति पा सकता है।

### प्रयोजन और उससे मिलने वाले फल को देखना आवश्यक

सारस्वत व्याख्यान देते हुए भारतीय दार्शनिक परिषद के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने कहा कि प्रयोजन और उससे मिलने वाले फल को देखना आवश्यक है। उन्होंने श्रीविद्या को ब्रह्मांड का ज्ञान बताते हुए कहा कि जो क्रिया यानि बुद्धि को प्राप्त कर उसका सदुपयोग करता है, वही पंडित है। मैकग्रिल यूनिवर्सिटी कनाडा के प्रो. अरविंद शर्मा ने कहा कि पूर्व में शाक्त तंत्र और इसके दूसरे प्रकार के तंत्र सभी वर्ण, जाति और महिलाओं के द्वारा भी किए जाते थे, और इसमें कोई प्रतिबंध नहीं था। उन्होंने तंत्र को अवचेतन शक्तियों को जागृत करने का माध्यम बताते हुए व्यापक अर्थ में विज्ञान की कसौटी पर कसकर दुनिया के कल्याण में इस्तेमाल करने की बात की।

**भारत ने श्रीलंका को धर्म और संस्कृति से किया समृद्धः** कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सद्गुरू ब्रह्मेश्वरानंदचार्य स्वामी ने कहा कि तंत्र में गुरु, देवता और मंत्र की खासी महत्ता है। उन्होंने 16 महाविद्याओं में एक श्रीविद्या की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। समारोह के मुख्य अतिथि और महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख उपातिस्सा नायका थैरो ने अपने भाषण में तंत्र और बौद्ध धर्म में बज्रयान की तुलना करते हुए कहा कि भारत ने श्रीलंका को धर्म और संस्कृति से समृद्ध किया है।

**इन देशों ने प्रस्तुत किए शोध पत्र :** अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, फिनलैंड, बैल्जियम, कोरिया, श्रीलंका एवं नेपाल से 34 विदेशी विद्वान समेत 130 भारतीय विद्वान शाक्त तंत्र के विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत कर रहे हैं।

नवदुनिया
भोपाल, मंगलवार 18 दिसंबर 2018

# संगीत की स्वरलहरियों से समझाया शाक्त तंत्र

## सांची विवि में शुरू हुए 'धर्म-धम्म' में सांस्कृतिक सभाएं

सांची विवि में शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति देते केवलम श्रीकुमार पणिक्कड़ और साथी।

भोपाल। नवदुनिया रिपोर्टर

सांची विश्वविद्यालय में सोमवार से शुरू हुए 'धर्म-धम्म' सम्मेलन में सांस्कृतिक सभाएं हुईं। इस मौके पर केरल के शास्त्रीय गायक केवलम श्रीकुमार पणिक्कड़ का गायन हुआ। साथ ही डॉ. पद्मजा सुरेश की भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुति के जरिए तंत्र और नाट्य शास्त्र विधा से रूबरू होने का मौका मिला।

यह धर्म-धम्म सम्मेलन शाक्त तंत्र पर आधारित है। शाक्तका अर्थ होता है देवी शक्ति। इसलिए केवलम श्रीकुमार ने अपनी प्रस्तुतियों को देवी आराधना केंद्रित ही रखा। उन्होंने प्रस्तुति की शुरुआत गणपति श्रुति मुदाकरा मोदकम से की। इसके बाद उन्होंने ललिता शास्त्रलिंगा, राज-राजेश्वरी अष्टकम, आदिशंकराचार्य की सौंदर्य लहरी, एगिरी नंदिनी, कनकधारा स्त्रोत, ललिता त्रिश्यति और मीनाक्षी पंचरत्ना के कुछ श्लोकों को गायन रूप में प्रस्तुत किया। इनके साथ हारमोनियम पर केवलम श्रीकुमार के साथ बांसुरी पर श्रीकुमार एवं तबले पर हरिकृष्णमूर्ति ने लहरा दिया। इसके पूर्व सम्मेलन में धार्मिक चर्चाएं हुईं।

## 45 मिनट में पेश की सुदर्शिनी, अनघा, श्रेया व माया

दूसरी प्रस्तुती के रूप में डॉ. पद्मजा सुरेश ने तंत्र और नाट्यशास्त्र पर आधारित भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुत किया। उन्होंने ललिता अर्पण, श्रीचक्र वर्णम और आदिशंकराचार्य के अर्धनारीश्वर अष्टक और सौंदर्य लहरी पर आधारित नृत्य की प्रस्तुती दी। सर्वप्रथम 45 मिनट तक डॉ.पद्मजा सुरेश ने एकल नृत्य प्रस्तुत किया। इसके बाद उनकी टीम की सदस्यों सुदर्शिनी, अनघा, श्रेया और माया ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। डॉ.पद्मजा इससे पहले भोपाल में पतंजलि योग पीठ और खजुराहो में अपनी प्रस्तुतियां दे चुकी हैं। केरल की रहने वाली डॉ.पद्मजा मुंबई में पली-बढ़ी हैं और उन्होंने मुंबई में ही नृत्य सीखा और अभ्यास किया है। उन्होंने अपनी पीएचडी भी तंत्र और नाट्यशास्त्र में की है। 18 दिसंबर को वे इस धर्म-धम्म सम्मेलन में अपना शोध पत्र भी प्रस्तुत करेंगी।

# <u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

# सांची विश्वविद्यालय में तंत्र और श्रीविद्या के गूढ़ अर्थों पर गहन मंथन

- **समापन सत्र में मध्य प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल मुख्य अतिथि होंगी**
- **19 दिसंबर को शाम 3 बजे आयोजित है समापन सत्र**
- **हिंदू धर्म के शाक्त तंत्र और यहूदी धर्म के कबालाह पर अध्ययन किया गया प्रस्तुत**
- **भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली में शक्ति और शक्ति पूजा के महत्व पर चर्चा**

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी धर्म-धम्म सम्मेलन के दूसरे दिन तंत्र शास्त्र की भारतीय और बौद्ध परंपराओं एवं श्रीविद्या के विभिन्न पहलुओं पर गंभीर विचार विमर्श हुआ। आज के पहले सत्र में प्रो. बीवीके शास्त्री ने बौद्ध तंत्र में श्री ललिता के संबंधों पर रोशनी डालते हुए शक्ति के विभिन्न रूपों की तुलना और उनके सामाजिक और दार्शनिक पक्ष को समझाया। उन्होंने कहा कि सामाजिक अर्ध में सरस्वती, लक्ष्मी और काली को अलग-अलग समझा जाता है लेकिन जब शाक्त तंत्र के दर्शन का अध्ययन किया जाता है तो इन तीनों में विभेद नहीं किया जाता। नॉर्थ कैरोलीना, अमेरिका से आई प्रो श्रवण बोरकाटकी वर्मा ने शोध पत्र में शास्त्रीय और आमजनों में चर्चित तंत्रों का तुलनात्मक अधययन प्रस्तुत किया। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि तंत्र शास्त्र को वर्तमान में कैसे अपनाया जाए और इनका डिजीटलीकरण करने से क्या नुकसान हो रहे हैं। कनाडा के सुसकटचेवन विश्वविद्यालय से आए प्रो ब्रज सिन्हा ने हिंदू धर्म  और यहूदी धर्म के संदर्भ में शाक्त तंत्र और कबालाह का अध्ययन प्रस्तुत करते हुए बताया कि दोनों ही दर्शनों के नारी शक्ति का खासा महत्व है। मुंबई विवि की प्रो. शुभदा जोशी ने वर्तमान समाज के संदर्भ में शाक्त तंत्र के विकास का अध्ययन प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र में प्रो. रामचंद्र भट्ट ने शिव के विभिन्न रूपों पर चर्चा की। कोरिया से इस सम्मेलन में शामिल होने पहुंचे प्रो. जियो लियॉन्ग ली ने तंत्र परंपरा में शिव और शक्ति के परस्पर संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिव के अर्धनारीश्वर रूप पर काफी विस्तार से अपने शोध को प्रस्तुत किया। एरिज़ोना विश्वविद्यालय के प्रो. केलेब सिमन्स ने तंत्र परंपरा में मंत्रों के भाषाई पहलू पर चर्चा की। उन्होंने मंत्र और उनके अर्थों पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किसी भी मंत्र की शक्ति इस बात पर निर्भर करती है कि वो कैसे उच्चारित किया जा रहा है, उसके अक्षर, ध्वनि, अर्थ और व्युत्पत्ति विज्ञान पर गहन चर्चा की। गुजरात विश्वविद्यालय की प्रो. अमी उपाध्याय ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली में शक्ति और शक्ति पूजा के महत्व पर चर्चा करते हुए बताया कि कत्थक, गरबा और शक्ति पूजा के दार्शनिक पक्ष एक समान हैं। प्रो. दिलीप कुमार मोहंता ने शास्त्र मूलक शक्ति साधना परशोध पत्र प्रस्तुत करते हुए पंचमकार के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि ये कैसे साधक को शक्ति पाने में सहायता करता है।

इस धर्म-धम्म सम्मेलन के दूसरे दिन के अकादमिक सत्रों के बाद हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम आयोजित किया गया। शास्त्रीय संगीत की प्रथम प्रस्तुती में डॉ विवेक बंसोड़ ने मंगल वाद्य पर अपनी प्रस्तुती दी। इस शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम में दूसरी प्रस्तुती दी पंडित गनपति भट्ट हसनागी ने। हारमोनियम पर उनका साथ दिया डॉ विवेक बंसोड़ ने और तबले पर संगत दी श्री श्रीधर मंदारे ने। कर्नाटक के पंडित गनपति भट्ट, धारवाड़ के उस्ताद पंडित बसवराज राजगुरू के शागिर्द हैं। पंडित गनपति ने किराना घराना, ग्वालियर घराना और पटियाला घराना से प्रेरित शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत किया।

समापन सत्र में मध्य प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल मुख्य अतिथि होंगी। तीन दिन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, फिनलैण्ड, बैल्जियम, कोरिया, श्रीलंका एवं नेपाल से 34 विदेशी विद्वान समेत 130 भारतीय विद्वान शाक्त तंत्र के विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत कर रहे हैं। दूसरे दिन दो सामान्य सत्र, छह गोलमेज सत्र एवं दो अकादमिक सत्र में करीब 60 विद्वानों ने अपने विचार एवं शोधपत्र प्रस्तुत किए। तीसरे और अंतिम दिन दो सामान्य सत्र एवं समापन सत्र होंगे।

दैनिक जागरण
बुधवार 19 दिसंबर 2018 अगहन शुक्ल 11, संवत 2075

# शास्त्रीय संगीत की महक और फिर जाना शास्त्रीय नृत्य शैलियों का महत्व

## सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में 'धर्म-धम्म' सम्मेलन

● जागरण रिपोर्टर ●

**सांची बौद्ध-भारतीय** ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी धर्म-धम्म सम्मेलन के दूसरे दिन तंत्र शास्त्र की भारतीय और बौद्ध परंपराओं एवं विद्या के विभिन्न पहलुओं पर गंभीर विचार विमर्श हुआ। अकादमिक सत्रों के बाद हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम आयोजित किया गया। शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति भी हुई। शास्त्रीय संगीत की प्रथम प्रस्तुती में डॉ विवेक बंसोड़ ने मंगल वाद्य पर अपनी प्रस्तुती दी। वहीं दूसरी प्रस्तुती दी पंडित गनपति भट्ट हसनागी ने दी। हारमोनियम पर उनका साथ दिया डॉ विवेक बंसोड़ ने और तबले पर संगत दी श्रीधर मंदारे ने। कर्नाटक के पंडित गनपति भट्ट, धारवाड़ के उस्ताद पंडित बसवराज राजगुरू के शागिर्द हैं। पंडित गनपति ने किराना घराना, ग्वालियर घराना और पटियाला घराना से प्रेरित शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत किया।

### नृत्य शैलियों पर चर्चा

गुजरात विश्वविद्यालय की प्रो. अमी उपाध्याय ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली में शक्ति और शक्ति पूजा के महत्व पर चर्चा करते हुए बताया कि कत्थक, गरबा और शक्ति पूजा के दार्शनिक पक्ष एक समान हैं। वहीं सत्र में प्रो. बीवीके शास्त्री ने बौद्ध तंत्र में श्री ललिता के संबंधों पर रोशनी डालते हुए शक्ति के विभिन्न रूपों की तुलना और उनके सामाजिक और दार्शनिक पक्ष को समझाया। उन्होंने कहा कि सामाजिक अर्थ में सरस्वती, लक्ष्मी और काली को अलग-अलग समझा जाता है लेकिन जब शाक्त तंत्र के दर्शन का अध्ययन किया जाता है तो इन तीनों में विभेद नहीं किया जाता। नॉर्थ कैरोलीना, अमेरिका से आई प्रो श्रवण बोरकाटकी वर्मा ने शोध पत्र में शास्त्रीय और आमजनों में चर्चित तंत्रों का तुलनात्मक अधययन प्रस्तुत किया। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि तंत्र शास्त्र को वर्तमान में कैसे अपनाया जाए और इनका डिजीटलीकरण करने से क्या नुकसान हो रहे हैं।

### नारी शक्ति का महत्व

कनाडा के सुसकटचेवन विश्वविद्यालय से आए प्रो ब्रज सिन्हा ने हिंदू धर्म और यहूदी धर्म के संदर्भ में शाक्ति तंत्र और कबालाह का अध्ययन प्रस्तुत करते हुए बताया कि दोनों ही दर्शनों के नारी शक्ति का खासा महत्व है। मुंबई विवि की प्रो. शुभदा जोशी ने वर्तमान समाज के संदर्भ में शाक्त तंत्र के विकास का अध्ययन प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में प्रो. रामचंद्र भट्ट ने शिव के विभिन्न रूपों पर चर्चा की। कोरिया से इस सम्मेलन में शामिल होने पहुंचे प्रो. जियो लियॉन्ग ली ने तंत्र परंपरा में शिव और शक्ति के परस्पर संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिव के अर्धनारीश्वर रूप पर काफी विस्तार से अपने शोध को प्रस्तुत किया। एरिज़ोना विश्वविद्यालय के प्रो. केलेब सिमन्स ने तंत्र परंपरा में मंत्रों के भाषाई पहलू पर चर्चा की। उन्होंने मंत्र और उनके अर्थों पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किसी भी मंत्र की शक्ति इस बात पर निर्भर करती है कि वो कैसे उच्चारित किया जा रहा है, उसके अक्षर, ध्वनि, अर्थ और व्युत्पत्ति विज्ञान पर गहन चर्चा की।

पत्रिका . भोपाल, बुधवार, 19 दिसंबर, 2018 .

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में धर्म-धम्म सम्मेलन

# हिंदू-यहूदी दर्शन में है नारी शक्ति का महत्व

भोपाल ◆ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में चल रहे धर्म-धम्म सम्मेलन के दूसरे दिन तंत्र शास्त्र की भारतीय और बौद्ध परंपराओं और श्रीविद्या के विभिन्न पहलुओं पर विमर्श हुआ। पहले सत्र में प्रो. बीवीके शास्त्री ने बौद्ध तंत्र में श्री ललिता के संबंधों पर शक्ति के विभिन्न रूपों की तुलना और उनके सामाजिक और दार्शनिक पक्ष को समझाया।

कनाडा के सुसकटचेवन विश्वविद्यालय से आए प्रो. ब्रज सिन्हा ने हिंदू धर्म और यहूदी धर्म के संदर्भ में शाक्त तंत्र और कबालाह का अध्ययन प्रस्तुत करते हुए बताया कि दोनों ही दर्शनों के नारी शक्ति का खासा महत्व है। मुंबई विवि की प्रो. शुभदा जोशी ने कहा कि सामाजिक अर्ध में सरस्वती, लक्ष्मी और काली को अलग-अलग समझा जाता है लेकिन जब शाक्त तंत्र के दर्शन का अध्ययन किया जाता है तो इन तीनों में विभेद नहीं किया जाता।

सांस्कृतिक संध्या के तहत डॉ. विवेक बंसोड़ ने मंगल वाद्य पर अपनी प्रस्तुति दी।

## मंत्र शक्ति में उच्चारण का महत्व

दूसरे सत्र में प्रो. रामचंद्र भट्ट ने शिव के विभिन्न रूपों पर चर्चा की। कोरिया से इस सम्मेलन में शामिल होने पहुंचे प्रो. जियो लियॉन्ग ली ने तंत्र परंपरा में शिव और शक्ति के परस्पर संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिव के अर्धनारीश्वर रूप पर काफी विस्तार से अपने शोध को प्रस्तुत किया। एरिज़ोना विश्वविद्यालय के प्रो. केलेब सिमन्स ने तंत्र परंपरा में मंत्रों के भाषाई पहलू पर चर्चा की। उन्होंने मंत्र और उनके अर्थों पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किसी भी मंत्र की शक्ति इस बात पर निर्भर करती है कि वो कैसे उच्चारित किया जा रहा है, उसके अक्षर, ध्वनि, अर्थ और व्युत्पत्ति विज्ञान पर गहन चर्चा की। गुजरात विश्वविद्यालय की प्रो. अमी उपाध्याय ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली में शक्ति और शक्ति पूजा के महत्व पर चर्चा करते हुए बताया कि कत्थक, गरबा और शक्ति पूजा के दार्शनिक पक्ष एक समान हैं। प्रो. दिलीप कुमार मोहंता ने शास्त्र मूलक शक्ति साधना परशोध पत्र प्रस्तुत करते हुए पंचमकार के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि ये कैसे साधक को शक्ति पाने में सहायता करता है।

राज एक्सप्रेस

बुधवार, 19 दिसम्बर, 2018

# धर्म.धम्म सम्मेलन की सांस्कृतिक संध्या में हुई भरतनाट्यम एवं शास्त्रीय गायन की प्रस्तुतियां

भोपाल। सांस्कृतिक कार्यक्रम में केरल के शास्त्रीय गायक केवलं श्रीकुमार पनिक्कर ने अपना गायन प्रस्तुत किया। यह धर्म.धम्म सम्मेलन शाक्त तंत्र पर आधारित है। शाक्त का अर्थ होता है देवी शक्ति। इसलिए केवलं श्रीकुमार पनिक्कर ने अपनी प्रस्तुतियों को देवी आराधना केंद्रित ही रखा। उन्होंने अपनी प्रस्तुती की शुरुआत गणपति श्रुति मुदाकरा मोदकम से की। इसके बाद उन्होंने ललिता शास्त्रलिंगा, राज.राजेश्वरी अष्टकम, आदिशंकराचार्य की सौंदर्य लहरी, एगिरी नंदिनी, कनकधारा स्त्रोत, ललिता त्रिश्यति और मीनाक्षी पंचरत्ना के कुछ श्लोकों को गायन रूप में प्रस्तुत किया। इनके साथ हारमोनियम पर केवलं श्रीकुमार नेए बांसुरी पर श्रीकुमार एवं तबले पर हरिकृष्णमूर्ति ने संगत की।

दूसरी प्रस्तुति के रूप में डॉ पद्मजा सुरेश ने तंत्र और नाट्यशास्त्र पर आधारित भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुत किया। उन्होंने ललिता अर्पण, श्रीचक्र वर्णम तथा आदिशंकराचार्य के अर्धनारीश्वर अष्टक और सौंदर्य लहरी पर आधारित नृत्य की प्रस्तुति दी। सर्वप्रथम 45 मिनट तक डॉ पद्मजा सुरेश ने एकल नृत्य प्रस्तुत किया इसके बाद उनकी टीम की सदस्यों सुदर्शिनी, अनघा, श्रेया और माया ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। डॉ पद्मजा इससे पहले भोपाल में पतंजलि योग पीठ और खजुराहो में अपनी प्रस्तुतियां दे चुकी हैं। केरल की रहने वालीं डॉ पद्मजा मुंबई में पली.बढ़ी हैं और उन्होंने मुंबई में ही नृत्य सीखा और अभ्यास किया है। उन्होंने अपनी पीएचडी भी तंत्र और नाट्यशास्त्र में की है। 18 दिसंबर को वे इस धर्म.धम्म सम्मेलन में अपना शोध पत्र भी प्रस्तुत करेंगी।

दैनिक भास्कर, भोपाल, बुधवार 19 दिसंबर, 2018

सांची बौद्ध यूनिवर्सिटी में धर्म धम्म सम्मेलन, भारतीय बौद्ध परंपराओं व श्रीविद्या पर हुआ विमर्श

# सरस्वती, लक्ष्मी और काली को अलग समझा जाता है, शाक्त तंत्र में भेद नहीं : प्रो शास्त्री

सिटी रिपोर्टर | भोपाल

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित धर्म धम्म सम्मेलन के दूसरे दिन मंगलवार को भारतीय और बौद्ध परंपराओं व श्रीविद्या पर केंद्रित सत्र में अलग-अलग पहलुओं पर विमर्श हुआ। पहले सत्र में प्रो. बीवी के शास्त्री ने कहा कि सामाजिक अर्थ में सरस्वती, लक्ष्मी और काली को अलग-अलग समझा जाता है, लेकिन जब शाक्त तंत्र के दर्शन का अध्ययन किया जाता है तो इन तीनों में भेद नहीं किया जाता। इस मौके पर नॉर्थ कैरोलीना, अमेरिका से आईं प्रो. श्रवण बोरकाटकी वर्मा ने रिसर्च पेपर प्रजेंट किया, जिसमें उन्होंने शास्त्रीय और चर्चित तंत्रों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि तंत्र शास्त्र को वर्तमान में कैसे अपनाया जाए और इनका डिजिटलीकरण करने से क्या नुकसान हो रहे हैं। कनाडा के सुसकटचेवन यूनिवर्सिटी से आए प्रो. ब्रज सिन्हा ने हिंदू धर्म और यहूदी धर्म के संदर्भ में शाक्त तंत्र और कबालाह के अध्ययन के बारे में बताया कि दोनों ही दर्शनों में नारी शक्ति का खासा महत्व है।

## कर्नाटक के गणपति भट्ट ने दी शास्त्रीय गीतों की प्रस्तुति

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर हुए कार्यक्रम में डॉ. विवेक बंसोड के हारमोनियम वादन से हुई। उन्होंने मंगल वाद्य पर केंद्रित प्रस्तुति से समां बांधा। इसके बाद कर्नाटक के गणपति भट्ट हसनागी ने शास्त्रीय गीतों की प्रस्तुति दी। उन्होंने किराना घराना, ग्वालियर और पटियाला घराना से प्रेरित शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत किया।

## शिव और शक्ति के रूपों और मंत्र उच्चारण पर चर्चा

दूसरे सत्र में प्रो. रामचंद्र भट्ट ने शिव के विभिन्न रूपों पर चर्चा की। कोरिया से आए प्रो. जियो लियॉन्ग ने तंत्र परंपरा में शिव और शक्ति के परस्पर संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिव के अर्धनारीश्वर रूप पर विस्तार से रिसर्च को प्रस्तुत किया। विशेषज्ञ प्रो. केलेब सिमन्स ने तंत्र परंपरा में मंत्रों के भाषाई पहलू पर चर्चा की, उन्होंने मंत्र और उनके अर्थों पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत कर कहा किसी भी मंत्र की शक्ति इस बात पर निर्भर करती है कि वो कैसे उच्चारित किया जा रहा है, उसके अक्षर, ध्वनि, अर्थ और विज्ञान पर गहन चर्चा की।

FREE PRESS www.freepressjournal.in
BHOPAL | WEDNESDAY | DECEMBER 19, 2018

DHARMA DHAMMA CONFERENCE

# Nuances of Tantra shastra discusses

OUR STAFF REPORTER
BHOPAL

On the second day of the Dharma-Dhamma Conference held in Sanchi University of Buddhist-Indic Studies in depth studies were discussed on the Indian and Buddhist traditions of Tantra Shastra and different aspects of Sri Vidhya.

Prof. BVK Shastri talked about the Trans formats and community adaptations of Sri Lalita into Buddhist tantra works. He discussed different forms of Shakti and compared its social and philosophical adaptations.

Prof. Sarvana Borkataky Varma from North Carolina presented a paper that compared the classical and folk tantras with their modern adaptations along with the benefits and drawbacks.

Prof Braj Sinha of University of Suskatchewan, Canada studied the specific nuances of Hindu and Jewish traditions with special reference to Shakti Tantra and Kabbalah. Dr. Shubhada Joshi looked at the development of Shakta Tantra with special reference to its contemporary society.

During the fourth plenary session of the conference Prof. Geo Long Lee of Korea discussed different depictions of Shiva. Prof Lee stated the relationship of Shiva and Shakti in Tantra tradition and its different perspectives. While discussing the symbolism & imagery in duality of femininity and masculinity he analysed the Ardhnarishwar form of Shiva in great detail.

Prof Calab Simmons from Arizona University studied the linguistic aspect of Mantra in the Tantra tradition. He discussed about the relationship of Mantra and its meaning. He said the meaning and power of Mantra depends on the combination of sounds, syllables, semantics and etymology.

Prof. Ami U. Upadhyaya of Ambedkar Open University, Ahemadabad (Gujarat) elaborated Shakti and Shakti pooja in Indian Classical Dance and in Gujarat as a state she stated that the Indian culture is a female centric culture. While discussing the dance form and Shakti pooja she said that Kathak, Garba and the Shakti pooja are same in terms of its philosophical approach.

Prof. Dilip Kumar Mohanta discussed the ShastraMulak Shakti Sadhana and the panch-makar that helps the Sadhak in attaining the Shakti.

A performance of Indian classical music was organised in the evening. On the second day 2 plenary sessions, 6 round table sessions and two academic sessions were held in which about 60 scholars presented their research works. On third and last day two plenary and valedictory sessions will be held.

# प्रेस विज्ञप्ति

## सांची विश्वविद्यालय में तंत्र और श्रीविद्या पर धर्म-धम्म सम्मेलन का समापन

- **समापन सत्र को राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने किया संबोधित**
- **तंत्र शास्त्र का दार्शनिक व सामाजिक पक्ष समाज के विकास के लिए आवश्यक- राज्यपाल**
- **तंत्र शास्त्र पर गहन शोध की आवश्यकता है- आचार्य यज्ञेश्वर शास्त्री**
- **शाक्त तंत्र पर केंद्रिय सम्मेलन से इतिहास को देखने की नई दृष्टि मिली- प्रो. जमखेड़कर**

तीन दिन से सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी धर्म-धम्म सम्मेलन का समापन राज्यपाल श्रीमति आनंदीबेन पटेल ने किया। समापन सत्र में राज्यपाल महोदया ने कहा कि तंत्र शास्त्र और श्रीविद्या, भक्ति और ज्ञान का अध्यात्मिक मार्ग है और इस विषय में जनमानस में अल्पज्ञान है जिसे की दूर किए जाने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि तंत्र शास्त्र और इसके दार्शनिक और सामाजिक पहलू समाज के विकास के लिए जरुरी है, जिनका मानव कल्याण में उपयोग होना चाहिए। राज्यपाल महोदया ने कहा कि विश्वविद्यालयों में कुलपति और रजिस्ट्रार सब मिलकर अपनी ड्यूटी नहीं बजाते जिससे छात्रों को मुश्किल होती है, ऐसे में सांची विश्वविद्यालय बधाई का पात्र है जहां सब मिलकर कार्य कर रहे हैं। समापन सत्र में राज्यपाल महोदया का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय के निर्वर्तमान कुलपति आचार्य यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि तंत्रशास्त्र शोध की दृष्टि से पिछड़ रहा है औऱ इस कॉन्फ्रेंस से शोध को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि तंत्र की साधना में शक्ति का बहुत महत्व है और राज्यपाल महोदया की समापन समारोह में उपस्थिति सफलता का द्योतक है। समापन समारोह में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो अरविंद पी जामखेड़कर ने कहा कि तंत्र पर केंद्रित इस सम्मेलन से उन्हें इतिहास को देखने की नई दृष्टि मिली है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री अदितिकुमार त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि तंत्र शास्त्र का उल्लेख भारतीय, बौद्ध और जैन साहित्य में प्रमुखता से मिलता है। उन्होने कार्यक्रम में पधारे सभी गणमान्य अतिथियों को धन्यवाद दिया।

समापन सत्र के पूर्व दो सामान्य सत्रों में अमेरिका से आए **प्रो देवाशीष बनर्जी** ने तंत्र और वेदांत के अंतरसंबंधों पर प्रकाश डालते हुए दोनों की प्रकियाओं एवं उद्देश्यों पर बात की। उन्होंने कहा कि देवी हमारे भीतर है एवं समस्त ऊर्जा हेतु देवी के प्रति नतमस्तक होने की आवश्यकता है। ऑस्ट्रिया के **प्रो जयेन्द्र सोनी** ने शैव सिद्धांत और शिवज्ञानबोध में शक्तिनिपात की बात करते हुए कहा कि शक्ति के बिना शिव की कल्पना नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि ज्ञान ही शाश्वत सत्य है और गुरु शिव का प्रतिरूप है। **प्रो विजय बहादुर सिंह** ने कहा कि वैदिक काल में शक्ति प्राप्त करने के लिए ही देवताओं की संकल्पना हुई। राम की शक्ति पूजा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि राम ने रावण पर विजय पाने के लिए शक्ति की उपासना की थी। **प्रो राधावल्लभ त्रिपाठी** ने महानिर्वाण तंत्र को आधार बनाकर वैदिक और दूसरी संस्कृतियों के बीच तुलना करते हुए तंत्र के साथ संबंधों पर पक्ष रखा। **प्रो स्थानेश्वर तिमलसीना** ने व्यक्तिपरकता के विचार को अभिनवगुप्त की परा, परापरा और अपरा विद्या के साथ प्रस्तुत किया। **प्रो क्रिस्टोफर चैपल** ने देवी पद्मावती के संदर्भ में मंत्रों की शक्ति और उसके असर पर अपना शोध प्रस्तुत किया। **प्रो गोदावरीश मिश्रा** ने सौदर्य लहरी के संदर्भ में आदि शंकराचार्य की उपनिषद और श्रीविद्या पर लेखन पर बात की। **प्रो कोएनार्ड एल्सट** ने भारतीय दर्शन और तंत्र परंपरा पर चीनी प्रभावों पर बात की। **प्रो चूड़ामणि नंदगोपाल** ने 1300 पदों की शक्तिनिधि पर केंद्रित श्रीविद्या में देवी के विभिन्न रुपों पर चर्चा की।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गांव बिलारा के छात्रों को राज्यपाल महोदया ने फल और किताबें और मेडिकल फर्स्ट एड किट भेंट की। कार्यक्रम का संचालन प्रो नवीन कुमार मेहता ने किया।

तीन दिन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, फिनलैण्ड, बैल्जियम, कोरिया, श्रीलंका एवं नेपाल से 34 विदेशी विद्वान समेत 130 भारतीय विद्वान शामिल हुए। 6 सामान्य सत्र, 9 गोलमेज सम्मेलन और तीन अकादमिक सत्रों में 100 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।।

पत्रिका PLUS
BHOPAL THURSDAY 20/12/2018
CITYLIVE

सांची विवि में तंत्र और श्रीविद्या पर धर्म-धम्म सम्मेलन के समापन सत्र में राज्यपाल आनंदी बेन पटेल बोलीं

# तंत्र शास्त्र का दार्शनिक और सामाजिक पक्ष समाज के विकास के लिए आवश्यक

भोपाल ◆ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में तीन दिनी धर्म-धम्म सम्मेलन का समापन बुधवार को राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने किया। राज्यपाल ने कहा कि तंत्र शास्त्र और श्रीविद्या, भक्ति और ज्ञान का अध्यात्मिक मार्ग है और इस विषय में जनमानस में अल्पज्ञान है जिसे दूर किए जाने की जरूरत है। तंत्र शास्त्र और इसके दार्शनिक और सामाजिक पहलू समाज के विकास के लिए जरुरी हैं, जिनका मानव कल्याण में उपयोग होना चाहिए। विवि कुलपति आचार्य यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि तंत्रशास्त्र शोध की दृष्टि से पिछड़ रहा है इस कॉन्फ्रेंस से शोध को बढ़ावा मिलेगा। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो. अरविंद पी. जामखेड़कर ने कहा कि तंत्र पर केंद्रित इस सम्मेलन से उन्हें इतिहास को देखने की नई दृष्टि मिली है। कुलसचिव अदिति कुमार त्रिपाठी ने कहा कि तंत्र शास्त्र का उल्लेख भारतीय, बौद्ध और जैन साहित्य में प्रमुखता से मिलता है।

### 34 विदेशी, 130 भारतीय विद्वान हुए शामिल

सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, फिनलैंड, बेल्जियम, कोरिया, श्रीलंका और नेपाल से 34 विदेशी विद्वान समेत 130 भारतीय विद्वान शामिल हुए। इसमें 6 सामान्य सत्र, 9 गोलमेज सम्मेलन और 3 अकादमिक सत्रों में 100 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत हुए।

### शक्ति बिना शिव की कल्पना नहीं

अमेरिका से आए प्रो. देवाशीष बनर्जी ने कहा कि देवी हमारे भीतर है और समस्त ऊर्जा के लिए देवी के प्रति नतमस्तक होने की आवश्यकता है। ऑस्ट्रिया के प्रो. जयेन्द्र सोनी ने शिव ज्ञानबोध में शक्तिनिपात की बात करते हुए कहा कि शक्ति के बिना शिव की कल्पना नहीं हो सकती।

### भारतीय दर्शन पर चीनी प्रभावों की भी हुई बात

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने महानिर्वाण तंत्र को आधार बनाकर वैदिक और दूसरी संस्कृतियों के बीच तुलना करते हुए तंत्र के साथ संबंधों पर पक्ष रखा। प्रो. स्थानेश्वर तिमलसीना ने व्यक्तिपरकता के विचार को अभिनवगुप्त की परा, परापरा और अपरा विद्या के साथ प्रस्तुत किया। प्रो. क्रिस्टोफर चैपल ने देवी पद्मावती के संदर्भ में मंत्रों की शक्ति और उसके असर पर अपना शोध प्रस्तुत किया। प्रो. गोदावरीश मिश्रा ने सौंदर्य लहरी के संदर्भ में आदि शंकराचार्य की उपनिषद और श्रीविद्या पर लेखन पर बात की। प्रो. चूड़ामणि नंदगोपाल ने 1300 पदों की शक्तिनिधि पर केंदित श्रीविद्या में देवी के विभिन्न रुपों पर चर्चा की।

मध्यप्रदेश
दैनिक भास्कर, भोपाल, गुरुवार 20 दिसंबर, 2018

तीन दिवसीय धर्म धम्म सम्मेलन के अंतिम दिन प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा

# वैदिक काल में शक्ति प्राप्त करने के लिए ही देवी-देवताओं की संकल्पना की गई थी

सिटी रिपोर्टर | भोपाल

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय धर्म धम्म सम्मेलन का बुधवार को समापन हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति आचार्य यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि तंत्रशास्त्र शोध की दृष्टि से पिछड़ रहा है। इस कॉन्फ्रेंस से शोध को बढ़ावा मिलेगा। अमेरिका से आए प्रो. देवाशीष बनर्जी ने तंत्र और वेदांत के अंतर संबंधों पर प्रकाश डालते हुए दोनों की प्रक्रियाओं और उद्देश्यों पर बात की। ऑस्ट्रिया के प्रो. जयेंद्र सोनी ने शैव सिद्धांत और शिवज्ञानबोध में शक्तिनिपात की बात करते हुए कहा कि शक्ति के बिना शिव की कल्पना नहीं हो सकती। ज्ञान ही शाश्वत सत्य है और गुरु शिव का प्रतिरूप है।

प्रो. विजय बहादुर सिंह ने कहा कि वैदिक काल में शक्ति प्राप्त करने के लिए ही देवी-देवताओं की संकल्पना हुई। राम की शक्ति पूजा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि राम ने रावण पर विजय पाने के लिए शक्ति की उपासना की थी। प्रो. क्रिस्टोफर चैपल ने देवी पद्मावती के संदर्भ में मंत्रों की शक्ति और उसके असर पर अपना शोध प्रस्तुत किया। प्रो. गोदावरीश मिश्रा ने सौंदर्य लहरी के संदर्भ में आदि शंकराचार्य की उपनिषद और श्रीविद्या पर लेखन पर बात की। प्रो. कोएनार्ड एल्स्ट ने भारतीय दर्शन और तंत्र परंपरा पर चीनी प्रभावों पर बात की।

### 100 से ज्यादा शोधपत्र प्रस्तुत

तीन दिन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, फिनलैंड, बेल्जियम, कोरिया, श्रीलंका और नेपाल से 34 विदेशी विद्वान समेत 130 भारतीय विद्वान शामिल हुए। साथ ही 6 सामान्य सत्र, 9 गोलमेज सम्मेलन और तीन अकादमिक सत्रों में 100 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।

**दैनिक जागरण**
गुरुवार 20 दिसंबर 2018 अगहन शुक्ल 12, संवत 2075

### सांची विवि में तंत्र और श्रीविद्या पर धर्म-धम्म सम्मेलन का हुआ समापन

# तंत्र शास्त्र का दार्शनिक व सामाजिक पक्ष समाज के विकास के लिए आवश्यकः राज्यपाल

नगर संवाददाता, भोपाल

तीन दिन से सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी धर्म-धम्म सम्मेलन का समापन बुधवार को राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने किया। समापन सत्र में राज्यपाल ने कहा कि तंत्र शास्त्र और श्रीविद्या, भक्ति और ज्ञान का अध्यात्मिक मार्ग है और इस विषय में जनमानस में अल्पज्ञान है, जिसे की दूर किए जाने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि तंत्र शास्त्र और इसके दार्शनिक और सामाजिक पहलू समाज के विकास के लिए जरुरी है, जिनका मानव कल्याण में उपयोग होना चाहिए। समापन सत्र में राज्यपाल का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति आचार्य यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि तंत्रशास्त्र शोध की दृष्टि से पिछड़ रहा है और इस कॉन्फ्रेंस से शोध को बढ़ावा मिलेगा।

समापन समारोह में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो अरविंद पी जामखेड़कर ने कहा कि तंत्र पर केंद्रित इस सम्मेलन से उन्हें इतिहास को देखने की नई दृष्टि मिली है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव अदितिकुमार त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि तंत्र शास्त्र का उल्लेख भारतीय, बौद्ध और जैन साहित्य में प्रमुखता से मिलता है। समापन समारोह में मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग के अवर मुख्य सचिव और सांची विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति मनोज श्रीवास्तव ने भी शिरकत की। समापन सत्र के पूर्व दो सामान्य सत्रों में अमेरिका से आए प्रो देवाशीष बनर्जी ने तंत्र और वेदांत के अंतरसंबंधों पर प्रकाश डालते हुए दोनों की प्रकियाओं एवं उद्देश्यों पर बात की। उन्होंने कहा कि देवी हमारे भीतर हैं एवं समस्त ऊर्जा के लिए देवी के प्रति नतमस्तक होने की आवश्यकता है। ऑस्ट्रिया के प्रो जयेन्द्र सोनी ने शैव सिद्धांत और शिवज्ञानबोध में शक्तिनिपात की बात करते हुए कहा कि शक्ति के बिना शिव की कल्पना नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि ज्ञान ही शाश्वत सत्य है और गुरु शिव का प्रतिरूप है।

## शक्ति प्राप्त करने हुई देवताओं की संकल्पना

प्रो विजय बहादुर सिंह ने कहा कि वैदिक काल में शक्ति प्राप्त करने के लिए ही देवताओं की संकल्पना हुई। राम की शक्ति पूजा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि राम ने रावण पर विजय पाने के लिए शक्ति की उपासना की थी। प्रो राधावल्लभ त्रिपाठी ने महानिर्वाण तंत्र को आधार बनाकर वैदिक और दूसरी संस्कृतियों के बीच तुलना करते हुए तंत्र के साथ संबंधों पर पक्ष रखा। प्रो स्थानेश्वर तिमलसीना ने व्यक्तिपरकता के विचार को अभिनवगुप्त की परा, परापरा और अपरा विद्या के साथ प्रस्तुत किया। प्रो चूड़ामणि नंदगोपाल ने 1300 पदों की शक्तिनिधि पर केंद्रित श्रीविद्या में देवी के विभिन्न रुपों पर चर्चा की।

The Hitavada
THURSDAY, DECEMBER 20, 2018

# 'Tantra Shastra', 'Shrividya' a spiritual devotion: Governor

■ Staff Reporter

GOVERNOR Anandiben Patel in the concluding programme of Dharm-Dhamm Sammelan held at Sanchi Boddha-Bhartiya Gyan Addhyan Vishwavidyalaya of Raisen district said that "Tantra Shastra" and "Shrividya" is a spiritual way of devotion and knowledge. People have little knowledge about it and there is a need to enhance their knowledge.

The Former Vice Chancellor of the university Acharya Yageshwar Shastri said that keeping in view the research, "Antrashstra" is lagging behind. This conference will help in encouraging research. The Chairman of Bhartiya Itihaas Anusandhan Parishad Professor Arvind P Jamkhedkar said that he got a new vision to visualize by this conference based on "Tantra". The Registrar of the university

Governor Anandiben Patel distributing fruits and books to children of Bilara village during concluding session of Dharm-Dhamm Sammelan at Sanchi Boddha-Bhartiya Gyan Addhyan Vishwavidyalaya in Raisen district on Wednesday.

Aditikumar Tripathi mentioned that "Tantra Shastra" is mentioned chiefly in Bhartiya, Boddh and Jain Literature. The Vice Chancellor of the University Manoj Shrivastava was also present on this occasion.

Informing about the co-relation of "Tantra" and "Vedant", Professor Devashish Bannerjee, who came from America threw light on processes and objectives in two general sessions before the concluding session. Professor Jayendra Soni of Austria while mentioning about "Shaiv Siddhant" and "Shaktinipad" in "Shivgyanboddh" said that we cannot think about Shiva without Shakti. He said that knowledge is everlasting truth and guru is a replica of Shiva.

Governor distributed fruits, books and medical first aid kits to students of adopted village Bilara at the concluding session of programme.

A total of 34 foreign scholars came from America, Canada, Germany, Austria, Finland, Belgium, Korea, Sri Lanka and Nepal besides 130 Indian Scholars took part in the 3 day International Conference. More than 100 research papers were presented during the 6 general sessions, 9 round table sessions and 3 academic sessions.

FREE PRESS www.freepressjournal.in
BHOPAL | THURSDAY | DECEMBER 20, 2018

DHARMA DHAMMA CONFERENCE

# Tantra Shastra and Sri Vidhya are spiritual ways to devotion, knowledge: Anandiben

OUR STAFF REPORTER
BHOPAL

Governor Anandiben Patel chaired the valedictory function of three day conference on Dharma-Dhamma held in Sanchi University (SU) of Buddhist Indic Studies on Wednesday.

Governor said that the Tantra Shastra and Sri Vidhya are the spiritual ways to devotion and knowledge. She said that a common man is unaware of the subject which should be rectified.

The Governor distributed fruits, drawing books and first aid kit to the students and aanganwadi worker of Bilara village adopted by university.

Ex- VC of SU Yajneshwar Shastri said Tantra Shastra is lacking behind in research. ICHR chairman Prof Arvind Jamkhedkar said conference's focus on Tantra Shastra helped him gain new insights into history.

On the third and last day of conference two plenary and valedictory sessions were held. Prof Debashish Banerjee discussed aims and methods of both Tantra and Vedanta Philosophy. He concluded his presentation with the mantras of surrender to Devi.

Prof Jayendra Soni presented his research on the concept of Shakti Nipat. In Shiva Sidhanta he focussed on Shiva Gyan Bodha. The twelve shlokas of Shivagra yogini and their Sanskrit and Tamil versions were discussed.

Prof Vijay Bahadur Singh talked about Gyan and its importance in the philosophical and materialistic upliftment of the society. He discussed Surya Kant Tripathi Nirala's Ram ki Shakti Pooja and discussed philosophy in Jay Shanker Prasad's Kamayani.

Prof. Radha Ballabh Tripathi started his paper with Mahanirvana Tantra and discussed the difference between vedic and non vedic cultures and also on structural unity in Tantra. He talked about Shakti in Abhinav Gupta's research along with Shiv Philosophy.

Giving the concluding remark registrar of SU Aditi Kumar Tripathi said Tantra is mainly mentioned in Indian, Buddhist and Jain literature. Additional chief secretary of the mp department of culture Manoj Shrivastava also attended the ceremony.

During the 3 day International Conference, 34 scholars from America, Canada, Germany, Austria, Finland, Belgium, Korea, Shri Lanka and Nepal and around 130 Indian Scholars participated. More than 100 research papers were presented in 6 plenary sessions, 9 Round table and 3 academic sessions.